1.3. चंद्रगुप्त मौर्य (321-300 ई० पू०) : जीवन एवं कार्य *(Chandragupta Maurya : Career and Achievements)*

मौर्यवंश का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य था। यूनानी आक्रमण से उत्पन्न संकट से ग्रस्त और मगध के अत्याचारी शासकों से त्रस्त जनता को मुक्ति दिलाने के लिए उसने ब्राह्मण चाणक्य की सहायता से अपना राज्य स्थापित किया।

चंद्रगुप्त का प्रारंभिक जीवन—जिस प्रकार मौर्यों की जाति के संबंध में अनेक मत प्रचलित हैं, उसी प्रकार चंद्रगुप्त मौर्य का प्रारंभिक जीवन भी किंवदंतियों पर आधृत है। बौद्धग्रंथों के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य के पूर्वज पिप्पलिवन के शासक थे। जब यह राज्य मगध-साम्राज्यवाद का शिकार बन गया, तब मोरियकुल के व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करने लगे। चंद्रगुप्त का बाल्यजीवन भी जंगलों में बीता। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात (पिता का नाम ज्ञात नहीं है) अपनी माता के साथ वह मगध की राजधानी पाटलिपुत्र चला आया। चंद्रगुप्त बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि का था। एक दिन 'राजकीलम्' खेल के दौरान चाणक्य की नजर उसपर पड़ी। चाणक्य सुविख्यात शिक्षाकेंद्र तक्षशिला का आचार्य था। वह यूनानी आक्रमणकारियों से भारत को स्वतंत्र करने का संकल्प लेकर मगध के शासक धननंद के पास पाटलिपुत्र आया था, परंतु नंद राजा ने उसे अपमानित कर निकाल दिया। कहा जाता है कि अपने अपमान से क्रुद्ध होकर उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह नंदों का नाश करेगा। पाटलिपुत्र से वापस लौटते समय उसकी नजर चंद्रगुप्त पर पड़ी। उसकी योग्यता से प्रभावित होकर वह उसे अपने साथ तक्षशिला ले गया एवं उसे समुचित शिक्षा दिलाकर उसी के द्वारा नंदों के विनाश की योजना उसने बनाई।

चंद्रगुप्त की विजय-योजना—चंद्रगुप्त के सामने दो स्पष्ट लक्ष्य थे—मगध से नंदों के अत्याचारी शासन को समाप्त करना तथा यूनानी आक्रमणकारियों से भारत को मुक्त करवाना। सबसे पहले उसने नंदशासक धननंद को पराजित करने की योजना बनाई। नंद राजा की शक्ति से वह अच्छी तरह परिचित था और जानता था कि उसे आसानी से पराजित नहीं किया जा सकता। इसलिए उसने सिकंदर से भेंट कर उससे सहायता की माँग की। जस्टिन महोदय इसकी पुष्टि करते हैं, परंतु चंद्रगुप्त की उद्दंडता से क्रुद्ध होकर सिकंदर ने उसे मार डालने की आज्ञा दी। फलतः, चंद्रगुप्त को भागकर अपनी जान बचानी पड़ी।

पंजाब की विजय—प्रारंभिक असफलता से चंद्रगुप्त निराश नहीं हुआ। उसने पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत में विदेशी शासन के विरुद्ध लोगों को भड़काना आरम्भ किया। उसने पंजाब के लड़ाकू कबीलों की एक सेना संगठित की तथा हिमालय के पर्वतीय राजा पर्वतक से मैत्री भी स्थापित की। इस समय तक पंजाब की स्थिति बिगड़ती जा रही थी। यूनानी सत्ता सिकंदर के विजय के बावजूद स्थायी नहीं हो पाई थी। यवनों के विरुद्ध विद्रोह होते रहते थे। वस्तुतः सिकंदर जब भारत में था तभी सिंध में भी विद्रोह हुआ था। अतः भारत छोड़ने के पूर्व, अपने विजित क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए सिकंदर ने इन्हें तीन क्षत्रपियों में विभक्त कर दिया था। फिलिप को एक बड़े क्षेत्र का क्षत्रप बनाया गया। उसके अधीन आम्भी का राज्य, निचली

काबुल घाटी से हिंदुकुश तथा सिंध से चेनाब तक का क्षेत्र था। आम्भी उसका सहायक था। झेलम और ब्यास के बीच का क्षेत्र पोरस के नियंत्रण में था। पिथन सिंध का क्षत्रप बनाया गया। सिकंदर की यह व्यवस्था कारगर सिद्ध नहीं हो सकी। चंद्रगुप्त और चाणक्य यूनानी सत्ता के विरुद्ध असंतोष भड़काते रहे। उन्हें अपने प्रयास में सफलता भी मिली और पंजाब में मुक्ति संघर्ष आरम्भ हो गया। सिकंदर की वापसी और उसकी मृत्यु (323 ई० पू०) के बाद तो स्थिति और भी अनियंत्रित हो गई। यूनानियों के विरुद्ध विद्रोह होने लगे थे। ऐसे ही एक विद्रोह के दौरान यूनानी क्षत्रप फिलिप की भी हत्या कर दी गई थी। जस्टिन के अनुसार, इन विद्रोहियों का नेता चंद्रगुप्त था। यूनानी सत्ता के कमजोर पड़ते ही चंद्रगुप्त ने सिंध और पंजाब पर अधिकार कर लिया एवं राजा बन बैठा।[1] सिंध और पंजाब हाथ में आते ही चंद्रगुप्त की शक्ति और महत्त्वाकांक्षा बढ़ गई। अब उसने मगध-विजय की योजना बनाई।

चंद्रगुप्त ने पहले सिंध और पंजाब पर अधिकार किया अथवा मगध पर यह एक विवादास्पद प्रश्न है। एच० सी रायचौधरी मानते हैं कि चंद्रगुप्त ने पहले मगध में नंदों की सत्ता पलटी और उसके बाद पंजाब-सिंध पर अधिकार किया। वस्तुतः कौन-सी घटना पहले हुई यह निश्चित नहीं है तथापि तत्कालीन परिस्थितियों से यही आभास होता है कि चंद्रगुप्त ने पहले सिंध-पंजाब पर अधिकार किया। पाटलिपुत्र पर अधिकार करने के लिए सेना और धन उसे वहीं से मिला। मगध पर चंद्रगुप्त के आक्रमण के समय में, उसकी सेना में यवन सैनिकों का उल्लेख संभवतः इसीलिए हुआ है।

मगध पर अधिकार—यद्यपि साहित्यिक स्रोतों में चंद्रगुप्त के मगध-अभियान का उल्लेख मिलता है, तथापि इसका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है। पंजाब से वह मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पहुँचा। मगध की जनता नंदशासकों के अत्याचारों से ऊब चुकी थी। अतः, चंद्रगुप्त का स्वागत एक मुक्तिदाता के रूप में किया गया। मगध की जनता के सहयोग से वह अंतिम नंदशासक, धननंद, को पराजित करने में सफल हुआ। धननंद या तो युद्ध में मारा गया अथवा राजधानी छोड़ भाग खड़ा हुआ। इस घटनाक्रम का विवरण **महावंश टीका, मिलिन्दपण्हो** तथा **परिशिष्टपर्व** में मिलता है। इनसे ज्ञात होता है कि चंद्रगुप्त ने पहले सीधे पाटलिपुत्र पर आक्रमण करने का प्रयास किया, परंतु इसमें वह विफल रहा। उसे युद्ध में क्षति भी उठानी पड़ी। अतः चंद्रगुप्त ने निकटवर्ती क्षेत्रों (राष्ट्र, जनपद) पर अधिकार कर आगे बढ़ने की योजना बनाई, परंतु यह प्रयास भी विफल हुआ। अंततः उसने नई नीति अपनाई। सीमावर्ती क्षेत्रों पर विजय कर, उनकी सुरक्षा की व्यवस्था कर वह पाटलिपुत्र पहुँचा। नंदों की सेना विशाल और शक्तिशाली थी। इसका सेनापति भद्दसाल था। धननंद को पराजित करने के लिए, **मुद्राराक्षस** के अनुसार, चाणक्य को षड्यंत्र करना पड़ा। धननंद और चंद्रगुप्त के बीच भीषण संघर्ष हुआ। **मिलिन्दपण्हो** के अनुसार युद्ध में 100 कोटि सैनिक, 10,000 हाथी, 1 लाख घोड़े और 5000 रथ मारे गए और नष्ट हुए। धननंद का गड़ा हुआ खजाना चंद्रगुप्त को मिला। **परिशिष्टपर्व** के अनुसार नंद राजा को अपनी दो पत्नियों एवं एक पुत्री के साथ जाने दिया गया, लेकिन बौद्ध ग्रंथों के अनुसार वह युद्ध में मारा गया। अब उसकी जगह 321 ई० पू० में चंद्रगुप्त मगध का सम्राट बना।

जम्बूद्वीप की विजय—चंद्रगुप्त सिर्फ पंजाब और मगध की विजय से ही संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि उसने भारत के अन्य भागों पर भी विजय प्राप्त की। प्लूटार्क के अनुसार, चंद्रगुप्त ने 6 लाख सेना के साथ समूचे भारत को रौंद डाला।[2] जस्टिन भी कहता है, कि सारा भारत उसके (चंद्रगुप्त के) कब्जे में था।[3] **प्लिनी** मगध साम्राज्य की सीमा सिंधु नदी तक बताता है। बौद्धग्रंथ **महावंश** से भी ज्ञात होता है कि कौटिल्य ने चंद्रगुप्त को जम्बूद्वीप का सम्राट बनाया।

इन विवरणों से स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब और मगध के अतिरिक्त चंद्रगुप्त ने भारत के अन्य भागों पर भी अपना आधिपत्य जमाया। पश्चिम में सौराष्ट्र पर चंद्रगुप्त के अधिकार की पुष्टि शक-शासक रुद्रदामन के जूनागढ़-अभिलेख से होती है। इस अभिलेख में बताया गया है कि चंद्रगुप्त का मनोनीत प्रांतपति पुष्यगुप्त सौराष्ट्र का शासक था। तमिल-लेखक मामुलनार के अनुसार चंद्रगुप्त ने तिनेवेली तक विजययात्रा की। मैसूर से प्राप्त कुछ अभिलेखों से, जो 14वीं शताब्दी के हैं, इस बात की पुष्टि होती है कि उत्तरी मैसूर चंद्रगुप्त के अधिकार में था। अशोक के अभिलेखों से भी मैसूर पर चंद्रगुप्त मौर्य का शासन परिलक्षित होता है। इस तरह चंद्रगुप्त ने विंध्य-पर्वत के दक्षिणी भाग के एक बड़े हिस्से पर अपना अधिकार कर लिया एवं मौर्य-साम्राज्य की सीमा विस्तृत की।

सेल्यूकस से संघर्ष—चंद्रगुप्त का एक अन्य महान सैनिक-अभियान सेल्यूकस के विरुद्ध हुआ। जिस समय चंद्रगुप्त अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहा था, उस समय सिकंदर के सेनानी आपसी प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष में व्यस्त थे। इस संघर्ष में अंततः सेल्यूकस को विजय मिली। 312-11 ई० पू० तक सेल्यूकस अपने प्रतिद्वंद्वियों पर निर्णायक रूप से विजय प्राप्त कर चुका था। बेबीलोन और बैक्ट्रिया को रौंदता हुआ वह भारत की तरफ बढ़ा। 305-04 ई० पू० में काबुल के मार्ग से होता हुआ वह सिंधु नदी की तरफ बढ़ा। उसका उद्देश्य सिकंदर द्वारा विजित भू-भाग पर पुनः अधिकार करना था; परंतु इस समय तक भारत की परिस्थिति बदल चुकी थी। सिकंदर की तरह उसे छोटे-छोटे असंगठित राज्यों से मुकाबला नहीं करना था, बल्कि चंद्रगुप्त जैसे शक्तिशाली शासक की सेना का सामना करना था। सिंधु नदी पार करते ही उसे चंद्रगुप्त की शक्तिशाली सेना का सामना करना पड़ा। इस युद्ध का पूर्ण विवरण यूनानी और रोमन साहित्य में नहीं मिलता। सिर्फ एप्पियानस इस युद्ध के विषय में लिखता है। उसके अनुसार, "सेल्यूकस ने सिंधु नदी पार की और भारत के सम्राट चंद्रगुप्त से युद्ध छेड़ा। अंत में उनमें संधि हो गई और वैवाहिक संबंध स्थापित हो गया।"

चंद्रगुप्त और सेल्यूकस के बीच संधि की पुष्टि अन्य यूनानी इतिहासकार भी करते हैं। संभवतः सेल्यूकस भारत के सम्राट के हाथों पराजित होने का खतरा लेने को तैयार नहीं था। इसलिए उसने संधि कर ली। संधि की शर्तों के अनुसार सेल्यूकस ने एरियाना के प्रदेश चंद्रगुप्त को सौंप दिए। इसके अंतर्गत चार प्रांत चंद्रगुप्त को मिले—एरिया (हेरात), आरकोशिया (कन्दहार), जेड्रोसिया या गेड्रोसिया (बलूचिस्तान) और पेरीपेमिसदाई या पैरोपेनिसडाई (काबुल)। इस संधि से दोनों को लाभ हुए। सेल्यूकस के राज्य की पूर्वी सीमा सुरक्षित हो गई और मौर्य-साम्राज्य की सीमा ईरान और अफगानिस्तान तक पहुँच गई। हिंदूकुश-पर्वतमाला मौर्य-साम्राज्य और सेल्यूकस के राज्य के बीच सीमा बन गई। एक विद्वान के अनुसार, "2000 से अधिक वर्ष पूर्व भारत के प्रथम सम्राट ने उस प्राकृतिक सीमा को प्राप्त किया, जिसके लिए अँगरेज तरसते रहे और जिसे मुगल-सम्राट भी पूरी तरह प्राप्त करने में असमर्थ रहे।" इन क्षेत्रों पर अधिकार होने से चंद्रगुप्त को अच्छे सैनिक और घोड़े प्राप्त करने की सुविधा मिली। कन्दहार जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर भी उसका नियंत्रण स्थापित हो गया। चंद्रगुप्त और सेल्यूकस के बीच वैवाहिक संबंध भी कायम हुआ। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चंद्रगुप्त से कर दिया और चंद्रगुप्त ने 500 हाथी उपहारस्वरूप सेल्यूकस को भेजे। सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगास्थनीज को पाटलिपुत्र भेजा जिसने **इंडिका** में चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन, पाटलिपुत्र, इसकी प्रशासनिक व्यवस्था और अन्य विषयों पर लिखा।

साम्राज्य विस्तार—अपने विजय अभियानों द्वारा चंद्रगुप्त ने नंदों से भी अधिक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। लगभग समस्त भारत को उसने एक राजनीतिक सूत्र में बाँध दिया। आरंभिक आक्रमणों के परिणामस्वरूप उसने अपना राज्य ब्यास से लेकर सिंधु नदी तक बढ़ा लिया। नंदों का उन्मूलन कर उसने नंद साम्राज्य के अवशेषों पर अधिकार कर लिया। सेल्यूकस को पराजित कर उसने मौर्य साम्राज्य का विस्तार मध्य एशिया तक किया। अभिलेखिय और साहित्यिक प्रमाणों से पश्चिम में सौराष्ट्र और दक्षिण में मैसूर तक उसके अधिकारों की पुष्टि होती है। इस प्रकार चंद्रगुप्त का साम्राज्य पश्चिम में हिंदूकुश पर्वत से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक तथा उत्तर में हिमालय श्रृंखला से दक्षिण में कम से कम मैसूर तक विस्तृत था। पश्चिमोत्तर में

उसका साम्राज्य मध्य एशिया तक विस्तृत था। उसके पूर्व अन्य किसी भारतीय शासक ने इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना नहीं की थी।

चंद्रगुप्त के अन्य कार्य—चंद्रगुप्त मौर्य सिर्फ एक महान विजेता ही नहीं, बल्कि एक कुशल प्रशासक भी था। उसके शासन का उद्देश्य लोकहितकारी राज्य की स्थापना करना था। उसने चाणक्य की सहायता से एक सुदृढ़ प्रशासन की भी व्यवस्था की। **अर्थशास्त्र** और **इंडिका** से इसकी जानकारी मिलती है। राजा राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी था। सारे अधिकार उसी के हाथों में केंद्रित थे। वह मंत्रिपरिषद एवं एक विस्तृत और कुशल नौकरशाही द्वारा प्रशासन चलाता था। राजा राज्य के सभी विभागों पर गुप्तचरों की सहायता से नियंत्रण रखता था। चंद्रगुप्त ने एक विशाल और स्थायी सेना भी संगठित की। राज्य की आमदनी बढ़ाने के उपाय किए गए एवं न्याय की समुचित व्यवस्था हुई। नगर-प्रशासन और स्थानीय प्रशासन की तरफ भी समुचित ध्यान दिया गया (चंद्रगुप्त के प्रशासन के विस्तार के लिए देखें 1.8)। राज्य आर्थिक-सामाजिक कार्यों में भी अभिरुचि रखता था। चंद्रगुप्त के समय में पाटलिपुत्र नगर का महत्त्व, साम्राज्य की राजधानी होने के कारण, अत्यधिक बढ़ गया। यूनानी लेखकों—मेगास्थनीज और एरियन—ने इस नगर की प्रशंसा की है। एरियन तो यहाँ तक कहता है कि पाटलिपुत्र के वैभव और गरिमा की बराबरी सूसा और एकबतना भी नहीं कर सकते हैं।

स्ट्रैबो के विवरण से चंद्रगुप्त मौर्य के दैनिक जीवन एवं उसके कार्यकलापों पर प्रकाश पड़ता है। उसके अनुसार राजा स्त्री अंगरक्षकों से घिरा हुआ महल में रहता था। वह सिर्फ युद्ध, यज्ञ, न्याय तथा आखेट के लिए बाहर निकलता था। चंद्रगुप्त ब्राह्मणों एवं श्रमणों का आदर करता था तथा उनसे परामर्श करता था। उसका अधिक समय राजकार्य में व्यतीत होता था तथापि उसकी अभिरुचि मद्यपान एवं खेलकूद में भी थी।

चंद्रगुप्त अपने पराक्रम, परिश्रम और निपुणता से भारत का प्रथम सम्राट एवं प्राचीन भारत का एक प्रमुख सम्राट बन बैठा। वह प्रथम भारतीय साम्राज्य-निर्माता, मुक्तिदाता और कुशल प्रशासक के रूप में विख्यात है। उसे 'मुक्तिदाता' (liberator) इसलिए कहा जाता है कि उसने एक तरफ तो मगध की जनता को नंदों के अत्याचारी शासन से मुक्ति दिलाई तो दूसरी तरफ पंजाब से यूनानियों के प्रभुत्व को समाप्त कर देश को विदेशी दासता से मुक्त किया। चंद्रगुप्त एक विजेता और प्रशासक के अतिरिक्त कूटनीतिज्ञ भी था। उसने विदेशी शासकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाया। परिणामस्वरूप भारतीय-यूनानी संपर्कों की परंपरा बढ़ी। अनेक यूनानी भारत में रहने लगे। चंद्रगुप्त ने भी अनेक यूनानी परंपराओं को अपना लिया। भारतीय कला और संस्कृति पर यूनानी संपर्क का गहरा प्रभाव पड़ा। इसीलिए अनेक विद्वानों का मानना है कि भारत को हेलेनाईज (Hellenise) करने में सिकंदर से अधिक योगदान चंद्रगुप्त का है। चंद्रगुप्त की धर्म में भी गहरी अभिरुचि थी। वह जैनधर्म का समर्थक था। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार अपने जीवनकाल के अंतिम चरण में उसने जैनधर्म अपना लिया। मगध में पड़नेवाले द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष से दुःखी होकर वह राज्य त्यागकर आचार्य भद्रबाहु के साथ मैसूर चला गया। वहीं श्रमणबेलगोला में उसने कैवल्य प्राप्त किया।